ह्वेनसांग तथा फाहयान के भारत वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन

1. फाहयान-ह्वेनसांग से पूर्व चन्द्रगुप्त-II के समय में 319 ई० के लगभग आया। ह्वेनसांग हर्षवर्धन के समय में सातवीं सदी में भारत आया।

2. फाहयान तथा ह्वेनसांग प्राचीन भारत में भारत में आये सर्वाधिक महत्वपूर्ण विदेशी यात्री थे। इनके विवरण तत्कालीन भारत की स्थिति पर प्रकाश डालते हैं।

   ह्वेनसांग तथा फाहयान के वर्णन में कुछ मौलिक अंतर है। जहां एक ओर फाहयान राजव्यवस्था यानि राजा आदि के बारे में कुछ नहीं बताता वहीं ह्वेनसांग राजा तथा शासन व्यवस्था पर काफी महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है।

3. फाहयान का वर्णन मुख्यतः सामाजिक व्यवस्था तथा मुद्रा तथा स्थापत्य के बारे में है। फाहयान ने गुप्तकालीन समाज में चाण्डालों की स्थिति पर वृहद प्रकाश डाला है। वह लिखता है कि चाण्डाल मांस, मदिरा, लहसुन खाते थे। यह शहर में जब आते थे तो नगाड़े बजाते हुए चलते थे जिससे कि आम लोग हट जाए क्योंकि आम जनता इन्हें अस्पृश्य समझते थे तथा इनकी छाया से भी बचने का प्रयत्न करते थे।

4. फाहयान कहता है कि शुद्र के अलावा अछूतों में चाण्डाल सहित कई अन्य वर्ग भी आते है। फाहयान तत्कालीन सामाजिक जीवन में उच्च स्तर की नैतिकता को बतलाता है। वह स्पष्ट कहता है कि लोग सच्चे तथा सरल थे तथा व्याभिचार, चोरी तथा अन्य पापों के लिए काफी दंड दिया जाता था।

5. फाहयान तत्कालीन आर्थिक दशा का विस्तृत विवरण देता है। वह कहता है कि बड़े आदान-प्रदानों के लिए स्वर्ण मुद्रा का प्रयोग किया जाता था जैसे कि भूमि का क्रय तथा विक्रय। स्वर्ण मुद्रा को दीनार कहा जाता था। इसके अलावा सामान्य जन-जीवन में वस्तुओं वे आदान-प्रदान के लिए तांबे की कौड़ियों का प्रयोग किया जाता था।

6. फाहयान पाटलिपुत्र में रहा तथा उसने अन्य देशों का भी भ्रमण किया। वह गुप्तकाल के स्थापत्य से भी काफी प्रभावित था। फाहयान मूलतः एक चीनी यात्री था जो कि भारत आया तथा उस समय उसने जो स्वयं देखा उसे उसने अपने लेखन के द्वारा स्पष्ट कर दिया।

Scanned with CamScanner

7. इसके विपरीत ह्वेनसांग एक चीनी बौद्ध भिक्षु था जो कि बौद्ध धर्म का अध्ययन करने के लिए बौद्ध धर्म की जन्म भूमि का भ्रमण करने के लिए आया। वह थानेश्वर, कन्नौज, मथुरा होता हुआ कुशनगर को देखता हुआ अन्ततः वापस चीन चला गया। उसने नालन्दा में रहकर अध्ययन भी किया तथा अपनी जिज्ञासा के कारण उसे वहां सम्मानित भी किया गया। वह बौद्ध धर्म का महान विद्वान सिद्ध हुआ।

8. कन्नौज में हर्षवर्धन ने उसका काफी स्वागत किया। उसने हर्षवर्धन तथा उसके शासन पर काफी जानकारी दी वह लिखता है कि हर्षवर्धन बहुत प्रजावत्सता शासक था तथा जनता के कल्याण में कार्य करते हुए उसे पूरा दिन भी कम पड़ता है। उस समय आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए वह लिखता है कि राज्य की आय चार भागों में व्यय की जाती थी। एक भाग राज्य के अधिकारियों के वेतन पर, दूसरा भाग विद्वानों को सहायता में, तीसरा भाग दान आदि में तथा चौथा भाग धार्मिक कार्यों में व्यय कर दिया जाता था। वह हर्षवर्धन की विशाल सेना का भी वर्णन करता है।

9. ह्वेनसांग उस समय की धार्मिक दशा पर भी प्रकाश डालता है। वह कहता है कि पहले हर्षवर्धन सूर्य तथा शैव अनुयायी था परन्तु बाद में बौद्ध अनुयायी हो गया। हर्षवर्धन कन्नौज में आयोजित महामोक्ष परिषद् का उल्लेख करता है जिसमें हीनयान, महायान, ब्राह्मण, जैन अनुयायी सहित कई राजा तथा सैकड़ों विद्वान तथा अन्य लोग शामिल हुए। इसमें महायान तथा हीनयान आदि के विवाद को निपटाने का भी प्रयास हुआ। इस सम्मेलन में महायान की जीत हुई तथा उसे सर्वश्रेष्ठ घोषित कर दिया गया। इसके सम्मेलन में ह्वेनसांग को भी सम्मानित किया गया।

10. इसी के साथ-साथ ह्वेनसांग प्रयाग में हर पांचवे वर्ष आयोजित की जाने वाले प्रयाग परिषद् का भी उल्लेख करता है। इसमें ब्राह्मण भिक्षुओं सहित बौद्ध भिक्षुओं तथा गरीब लोगों को बड़े पैमाने पर दान देता था। उसका अपार खजाना इसमें खाली हो जाता था तथा अंत में वह अपने वस्त्र भी दान दे देता था और अपनी बहन से मांगकर वस्त्र धारण करता था।

11. इस प्रकार से ह्वेनसांग जहां मुख्यतः बौद्ध धर्म तथा अपने आश्रयदाता हर्षवर्धन तक ही अपनी जानकारी सीमित कर देता है, वहीं दूसरी तरफ फाहयान तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर विस्तृत प्रकाश डालता है। तथापि दोनों के ही वितरण अपनी दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं तथा उस समय की स्थिति को जानने का अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। इसी कारण प्राचीन भारत के विदेशी विवरणों में इन दोनों का महत्व अतुलनीय है।

Scanned with CamScanner